INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VII-2nd Lang.	Department: Hindi	Date of submission:
Lesson– 7 हम पंछी उन्मुक्त गगन के	Topic -Question Bank /Grammar	Pl File in portfolio...

अति लघु प्रश्न

प्रश्न-1 हम पंछी उन्मुक्त गगन के पाठ के रचयिता कौन हैं?

उत्तर- हम पंछी उन्मुक्त गगन के पाठ के रचयिता शिव मंगल सिंह 'सुमन' हैं।

प्रश्न-2 पंछी अपना मधुर गीत कब नहीं गा पाएँगे?

उत्तर- पंछी अपना मधुर गीत पिंजरे में बंद होकर नहीं गा पाएँगे।

प्रश्न-3 पंछी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं?

उत्तर- पंछी नदी और झरनों का बहता जल पीना पसंद करते हैं।

प्रश्न-4 पंछियों के लिए पिंजरे में रखे मैदा से बेहतर क्या है?

उत्तर- पंछियों के लिए पिंजरे में रखे मैदा से बेहतर कडवी निबौरी अर्थात नीम का फल है।

प्रश्न-5 पिंजरे में पंख फ़ैलाने पर पंछियों की क्या दशा होगी?

उत्तर- पिंजरे में पंख फ़ैलाने पर पंछियों के पंख पिंजरे की सलाखों से टकराकर टूट जाएँगे।

लघु प्रश्न

प्रश्न-1 पक्षी कैसा जीवन जीना चाहते हैं?

उत्तर- पक्षी स्वतंत्र जीवन जीना चाहते हैं| वे अपनी इच्छा के अनुसार खुले आसमान में उड़ना चाहते हैं| पक्षी पेड़ों की फुनगी पर बैठकर झूलते हुए गाना चाहते हैं|

प्रश्न-2 पिंजरे में पंछी क्या-क्या नहीं कर सकते हैं?

उत्तर- पिंजरे में पंछी पंख नहीं फैला सकते, ऊँची उड़ान नहीं भर सकते, बहता जल नहीं पी सकते और पेड़ों पर लगे हुए फल नहीं खा सकते हैं|

प्रश्न-3 पंछियों के सपने और अरमान क्या हैं?
उत्तर- पंछियों के सपने और अरमान पेड़ों की डालियों पर बैठकर झूला झूलने और आकाश की सीमा तक उड़ने के हैं। वे लाल–लाल तारे जैसे अनार के दाने चुगने के भी अरमान रखते हैं ।

प्रश्न-4 हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते?
उत्तर- हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद इसलिए नहीं रहना चाहते क्योंकि उन्हें स्वतंत्रता पसंद हैं, वे बंधन में नहीं रहना चाहते। वे खुल कर आकाश में उड़ना चाहते हैं।

दीर्घ प्रश्न

प्रश्न-1 पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन-कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं?
उत्तर- पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कई इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं, जैसे कि वे खुले आसमान में उड़ते-उड़ते थक कर नदी तालाबों से पानी पीना चाहते हैं, वृक्षों में लगे हुए कड़वे फलों को खाना चाहते हैं और वृक्षों के कोमल पत्तों पर झूलना चाहते हैं तथा वे अपनी लाल चोंच से आकाश में चमकते अनार के दाने रूपी तारों को चुगना चाहते हैं।

प्रश्न-2 पक्षियों को पिंजरे में घुटन क्यों होती है?
उत्तर- पक्षियों को पिंजरे में घुटन इसलिए होती है क्योंकि पिंजरे में पक्षी उड़ान नहीं भर सकते, नदी-झरनों का बहता पानी नहीं पी सकते, कड़वी निबौरियाँ नहीं खा सकते, अनार के दानों रूपी तारों को चुग नहीं सकते। पिंजरे में पक्षियों को सभी सुख सुविधाएँ मिल जाए, जो उनके जीवन के लिए जरूरी हैं तभी वे पिंजरे में नहीं रहना चाहते है। वे स्वतंत्र रहना चाहते हैं।

प्रश्न-3 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' कविता के माध्यम से कवि हमें क्या संदेश देना चाहता है?
उत्तर- इस कविता के माध्यम से कवि हमें यह संदेश देना चाहता है कि स्वतंत्रता सबसे अच्छी है। स्वतंत्र रहकर ही अपने सपने और अरमान पूरे किए जा सकते हैं। पराधीनता में सारी इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं। जिस तरह हम सभी को स्वतंत्रता अच्छी लगती है उसी

तरह पक्षियों को भी स्वतंत्रता अच्छी लगती है इसलिए हमें पक्षियों को बंदी बनाकर नहीं रखना चाहिए। उन्हें खुले आसमान में उड़ने देना चाहिए।

व्याकरण भाग-

प्रश्न 1- दिए गए शब्दों के विलोम लिखिए|

1. स्वाधीनता x पराधीनता
2. गृहस्थ x संन्यासी
3. ऊँचा x नीचा
4. गुरु x शिष्य
5. उपयोगी x अनुपयोगी
6. एकता x अनेकता
7. अनुराग x विराग
8. स्वदेश x परदेश
9. नूतन x पुरातन
10. निरक्षर x साक्षर

प्रश्न-2 दिए गए शब्दों के दो-दो अनेकार्थी शब्द लिखिए|

1. अवकाश = अवसर , छुट्टी
2. घन = बादल , हथौड़ा
3. टीका = व्याख्या , माथे पर लगा तिलक
4. नग = पर्वत , नगीना
5. चोटी = पर्वत शिखर , बालों की चोटी
6. गति = चाल , मोक्ष
7. अंक = गिनती के अंक , गोद
8. अंबर – आकाश , कपड़ा

प्रश्न-3 अनुच्छेद- काश! अगर मैं पक्षी होता

अगर मैं पक्षी होता तो मैं दूर अनंत गगन में स्वच्छंद होकर विचरण करता। मैं धरती के इस छोर से दूसरे छोर को अपने पंखों से नाप लेता। अगर मैं पक्षी होता तो आसमान की ऊँचाइयों को छूने की कोशिश करता। मैं उन ऊँचाइयों को छूने की कोशिश करता जहाँ तक पहुँचने का सपना इंसान केवल देखते ही रह जाते हैं। मैं खुली हवा में अपने पंखों को फहरा कर ठंडी हवा का आनंद लेता। अपने साथी पक्षियों के साथ झुंड बनाकर इधर से उधर विचरण करता। पल भर में मैं जहाँ जाना चाहता वहाँ जाता। अगर मैं पक्षी होता तो कभी किसी पहाड़ की चोटी पर उन्मुक्त होकर पहुँच जाता तो कभी किसी पेड़ की डाली पर मस्त होकर झूलता। यदि मेरा मन होता तो मैं समुद्र की सीमा को अपने पंखों से नापने की कोशिश करता तो कभी पर्वत की ऊँचाइयों को अपने पंखों से नापने की कोशिश करता।

अगर मैं पक्षी होता तो मैं पेड़ पर बैठकर अपनी आवाज में मधुर गीत गाता| मदमस्त होकर सारी ऋतुओं का आनंद लेता। मेरे अंदर इंसानों की तरह छल-कपट, तनाव-चिंता, लालच-मोह आदि नहीं होता। मुझे तो बस इस जग के आनंद में डूब जाने की कामना होती।

****